

Chapter 11

Question: Why does one feel sad when someone dies whom one knew, whom one loved?

Krishnamurti: You feel sad when any friend or near relation of yours dies. Do you feel sad for the person who is dead or for yourself? The other person is gone, and you are left to face life. With that person you felt somewhat secure, somewhat happy; you felt a companionship, a friendship. That person is gone, and you are left with your insecurity, are you not? You are constantly aware of your loneliness. You are aware that you have been stripped of companionship. There was a person with whom you could talk and express yourself as you were. When that person is gone, you feel very sad; out of your loneliness, out of your sense of not having anyone to whom you can turn, you feel very sad, but you do not feel sad for that person. You feel sad for yourself. And feeling sad, you create all kinds of theories, all kinds of beliefs.

It is very important, is it not, to understand this process of dependence. Why does one depend on another? For certain things I depend on the milkman, on the postman, on the man who drives the engine, on the bank, or on the policeman; but my dependence on these is entirely different from the dependence based on fear and on the inward demand for comfort. As I do not know how to live, I am confused, I am lonely, I want someone to help me; I want someone to guide me, someone on whom I can rely, a master, a book,

प्रश्न : जब किसी ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है जिसे हम जानते थे, जिससे हमें प्यार था, तो हमें दुख क्यों होता है?

कृष्णमूर्ति : जब आपके किसी मित्र की या निकट संबंधी की मृत्यु हो जाती है तो आप दुखी हो जाते हैं। क्या आप उस व्यक्ति के लिए दुखी होते हैं जो मर चुका है, या आप अपने लिए दुखी होते हैं? जो मर गया वह जा चुका होता है, और जीवन का सामना करने के लिए आप अकेले रह जाते हैं। जब वह व्यक्ति आपके साथ था तो आप कुछ सुरक्षित सा अनुभव करते थे, थोड़ा सुखी अनुभव करते थे, आपको मित्रता का, साथ होने का अनुभव होता था। वह विदा हो चुका है और पीछे रह गए आप अपनी असुरक्षा के साथ, ऐसा ही हैं न? आपका अकेलापन आपको लगातार कचोटता रहता है। आपको पता है कि आपसे आपका साथ छीन लिया गया। ऐसा व्यक्ति था जिसके प्रति आप निस्संकोच होकर, आप जैसे भी हैं जो भी हैं, उसे व्यक्त कर सकते थे, उससे कह सकते थे। जब वह व्यक्ति जा चुका है, तो आप बहुत दुखी हैं, चूंकि आप अकेलापन महसूस कर रहे हैं, चूंकि अब कोई ऐसा कहीं नहीं है जो इस अकेलेपन को दूर करने में आपकी सहायता कर सके इसलिए आप बहुत दुखी हैं। परंतु आप उस व्यक्ति के लिए दुखी नहीं हैं, आप अपने लिए दुखी हैं। और दुखी होने के कारण आप अनेक तरह के सिद्धांत गढ़ लेते हैं, अनेकों विश्वास अपना लेते हैं।

क्या यह बहुत ज़रूरी नहीं है कि निर्भरता की इस प्रक्रिया को समझा जाए? मनुष्य किसी दूसरे पर निर्भर क्यों रहता है, मैं दूधवाले पर, पोस्टमैन पर और उस व्यक्ति पर जो कि इंजन चलाता है, बैंक पर और पुलिसवाले पर अवश्य ही निर्भर करता हूं, पर इन पर निर्भर करना उस तरह की निर्भरता से एकदम अलग चीज़ है जो कि भय पर और सुख-सुविधा की आंतरिक मांग पर आधारित होती है। मैं नहीं जानता कि जिया कैसे जाता है, मैं भ्रमित हूं, अकेला हूं इसलिए चाहता हूं कि कोई मेरी मदद करे, कोई मेरा मार्गदर्शन करे, कोई आध्यात्मिक शिक्षक, कोई पुस्तक या कोई सिद्धांत हो जिस पर मैं भरोसा कर सकूं। जब वह आश्रय मुझसे छीन लिया जाता है तो मैं असहाय महसूस करने लगता हूं और अपने असहाय हो जाने का

Chapter 11

or an idea. When that dependence is taken away from me, I feel lost, and this sense of loss creates suffering.

Is it not important, while we are at school, to understand this problem of dependence so that we may grow without depending on anyone inwardly? That requires a great deal of intelligence, a great deal of inquiry. Surely, it is the function of education to help to free the mind from any sense of fear, which makes for dependence. Being dependent, we say, 'How can I be free from dependence?' But if one understood the process, the ways of dependence, then there would be no problem of how to be free from it. The very understanding frees the mind from dependence.

Question: What is a star?

Krishnamurti: I am sorry I cannot give you a scientific explanation. You can find out what a star is from any scientific book or from your science teacher.

Have you looked at a star? What do you feel when you look at a star? When you look at the sky of an evening and see the many thousands and millions of stars and planets, what do you feel? Do you just look and move away? Most of us do that. We are talking with somebody and we say, 'Look at the stars and the moon, what a beautiful night!' and go on with our talk. But, if you are alone or with people who are not always chattering or talking but who want to look at things, then when you look at the stars, what do you feel? Do you feel small in this vast universe, or do you feel that it is part of you; the whole thing—the

बोध मेरे लिए क्लेश का कारण बन जाता है।

जब हम विद्यालय में हैं, क्या उस समय ही यह ज़रूरी नहीं है कि आश्रित होने की इस समस्या को समझ लें, ताकि हम मानसिक रूप से किसी पर आश्रित हुए बिना ही विकसित हो सकें? इसके लिए यह ज़रूरी है कि हममें गहरा विवेक हो, गहराई से खोजबीन करने की क्षमता हो। किसी भी प्रकार के भय की अनुभूति इस प्रकार की निर्भरता उत्पन्न करती है अतः निस्संदेह शिक्षा का कार्य मन को भय की एहसास से मुक्त करना है। निर्भर होने के कारण हम कहते हैं, 'मुझे निर्भरता से कैसे छुटकारा मिले?' परंतु यदि इसकी प्रक्रिया को, निर्भरता के कारणों को समझ लिया जाए तो यह समस्या ही नहीं होगी कि इससे मुक्त कैसे हुआ जाए। इस प्रकार की समझ ही मन को किसी पर भी आश्रित होने से मुक्त कर देती है।

प्रश्न--तारा क्या होता है?

कृष्णमूर्ति--मुझे अफसोस है कि मैं आपको इसकी वैज्ञानिक व्याख्या नहीं दे सकूंगा। तारा क्या होता है इसके बारे में आप किसी विज्ञान की पुस्तक से अथवा अपने विज्ञान के शिक्षक से जान सकते हैं।

क्या आपने कभी तारे को देखा है? जब आप किसी तारे को देखते हैं तो आपको क्या महसूस होता है? जब आप किसी दिन शाम के समय आकाश को देखते हैं और जब आपको वहां करोड़ों तारे और ग्रह-नक्षत्र दिखाई देते हैं तो आपको कैसा लगता है? क्या आप उन पर एक नजर डालकर आगे निकल जाते हैं? हममें से ज्यादातर लोग ऐसा ही करते हैं। हम किसी से बात कर रहे होते हैं और हम कहते हैं, 'तारों को और चंद्रमा को देखो, रात कितनी सुंदर लग रही है!' और फिर अपनी बातों में लग जाते हैं। परंतु यदि आप अकेले हैं, या आपके साथ जो लोग हैं वे बहुत बातूनी नहीं हैं बल्कि जो अपने आसपास की चीजों को ठीक से देखते हैं, तब आप तारों को देखते हैं तो आपको कैसा लगता है? क्या आप यह महसूस करते हैं कि इस विराट विश्व में आप बहुत छोटे हैं, या यह कि यह सब आपका ही

Chapter 11

stars, the moon, the trees, and the river? Have you the time to look and find out your own feeling?

How difficult it is to look at anything beautiful without the mind interfering, without the mind with its memories saying, 'This is not such a good night as the other night,' 'It is not as beautiful as it was last year,' 'It is too cold, I cannot look.' The mind never looks without words, without comparison. It is only when you can look without comparison, or without words, that the stars and the earth and the trees and the moon and the light on the water have an extraordinary significance. In that, there is great beauty. To look without comparison, one has to understand the mind because it is the mind that looks, it is the mind that interprets what it sees, giving it a name. The very naming of a thing by the mind becomes the way of pushing it away.

So, when you look at a star or at a bird or at a tree, find out what is happening to you as you look, and that will reveal a great deal about yourself.

Question: Man has made great progress in the material world. Why is it we do not see progress in other directions?

Krishnamurti: It is fairly clear why we make progress in the material world, especially in the new world where there is a great deal of energy, a great release of intellectual capacity. When you are colonizing a new world, you have to invent, you have to struggle. Man has made progress from the

हिस्सा हैं, यह सब तारे, चंद्रमा, वृक्ष और नदी? क्या आपके पास तब इतना समय होता है कि यह सब ठीक से देखें और आपको क्या महसूस होता है उसे जान सकें?

यह कितना कठिन है कि किसी सुंदर वस्तु को आप देखें और मन अपनी स्मृतियों के साथ उसमें हस्तक्षेप न करे, जब मन यह न कहे, 'यह उतनी सुंदर रात्रि नहीं है जितनी कि वह थी', 'यह उतनी सुंदर नहीं है जितनी कि पिछले वर्ष देखी थी', 'आज तो बहुत ठंड है, मैं नहीं देख सकूंगा'। मन शब्द रहित होकर, तुलना से मुक्त रहकर कभी नहीं देखता। और जब आप तुलना से मुक्त रहकर, शब्द से रहित रहकर देख सकें केवल तब ही तारे, धरती, वृक्ष और चंद्रमा तथा जल पर फैले आलोक के असाधारण अर्थ प्रकट होते हैं। वहां पर गहन सौंदर्य होता है। तुलनामुक्त होकर देखने के लिए मन को समझना ज़रूरी है, क्योंकि मन ही देखता है और मन जिसे भी देखता है, उसे नाम देकर उसकी व्याख्या करने लगता है। मन के द्वारा किसी भी वस्तु को नाम दिया जाना ही उससे दूर हो जाने का कारण बन जाता है।

इस प्रकार जब आप किसी तारे को या किसी पक्षी अथवा वृक्ष को देखें तो इसका पता लगाएं कि उसे देखते समय आपके भीतर क्या घटित हो रहा है, और इससे आपको अपने ही बारे में अनेक बातों का पता चलेगा।

प्रश्न : भौतिक जगत में मनुष्य ने उल्लेखनीय प्रगति की है। दूसरे क्षेत्रों में कोई प्रगति क्यों नहीं दिखाई पड़ती?

कृष्णमूर्ति : भौतिक जगत में हम प्रगति क्यों कर रहे हैं, खासकर आधुनिक विश्व में, यह तो समझना आसान ही है, क्योंकि वहां लोगों में प्रचुर उत्साह है, मनुष्य की बौद्धिक क्षमताओं का ज्वार उमड़ पड़ा है और उसे पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं। जब आप एक नया विश्व बना रहे हों तो आपको नया सृजन करना होता है, परिश्रम करना होता है। धनुष-बाण के काल से मनुष्य अब

Chapter 11

bow and arrow to the atom bomb, from the bullock cart to the jet plane that travels about 1600 miles an hour; that is generally called progress. But is there progress in any other direction, inwardly? Have you; as an individual, progressed inwardly? Have you found anything for yourself?

We know what other people have said, what other people have found. But, have we found anything for ourselves? Are we more charitable, more kind? Are our minds more expansive and alert, inwardly? Have we put away fear? Without these things, to make progress in the world is to destroy ourselves.

Question: What is God?

Krishnamurti: You know how for the villager, the peasant, God is that little image before which he puts some flowers. Primitive people call thunder their God, and others worship trees and nature. At one time, man worshipped the apple tree and the olive tree in Europe. There are people in India even now who worship trees.

Go into any temple, and there you will see an image covered with oil and garlands and jewels; you call that your God, and you put flowers and do puja before it. You may go further and create an image in your mind, an idea that is born of your own tradition, out of your background; and that, you call your God. The man who threw the atom bomb thought that God was by his side. Every warlord, from Hitler and Kitchener to any little general, invokes God. Is that image or that idea really God? Or, is God something unimaginable, not measurable by our minds?

परमाणु बम तक की प्रगति कर चुका है, वह बैलगाड़ी के युग से जेट विमानों के युग तक प्रगति कर चुका है, जो अब १६०० मील प्रति घंटे की गति से उड़ सकते हैं। इसे ही सामान्यतः प्रगति कहा जाता है। परंतु क्या किन्हीं अन्य तलों पर, मानसिक तल पर कोई प्रगति हुई है? व्यक्तिगत रूप से अपने भीतरी तल पर आपने कोई प्रगति की है? क्या अपने भीतर कुछ पाया है?

दूसरे लोगों ने क्या कहा है, क्या पाया है, यह तो हम जानते हैं। परंतु क्या स्वयं अपने लिए हमने कुछ पाया है? क्या हम अधिक उदार, अधिक सहृदय हुए हैं? क्या हमारे मन, हमारे हृदय अधिक विशाल, अधिक जागरूक हुए हैं? क्या हम भय को छोड़ सके हैं? इन बातों के बिना संसार में प्रगति करना अपने आपको नष्ट करना है।

प्रश्न : ईश्वर क्या है?

कृष्णमूर्ति : आप जानते हैं कि कैसे एक ग्रामीण व्यक्ति, कोई किसान उस प्रतिमा को ईश्वर मान लेता है जिस पर वह कुछ फूल आदि चढ़ाता है। आदिम मानव मेघ-गर्जना को भगवान मानता है और कुछ दूसरे मनुष्य पेड़-पौधों और प्रकृति को भगवान मानते हैं। एक समय ऐसा भी था जब यूरोप में लोग सेब के और जैतून के वृक्षों की पूजा किया करते थे। भारत में आज भी कई लोग वृक्षों की पूजा करते हैं।

किसी भी मंदिर में जाइए तो वहां आप कोई मूर्ति पाएंगे जिस पर तेल, फूलों के हार और आभूषण चढ़ाए जाते हैं, उसे आप भगवान कहते हैं और उस पर फूल चढ़ाकर आप उसकी पूजा करते हैं। आप चाहें तो इससे और भी एक कदम आगे जाकर अपने मन में ही एक प्रतिमा बना सकते हैं, एक कल्पना रच सकते हैं, जो आपकी परंपरा से, आपकी पृष्ठभूमि से उत्पन्न हुई हो और उसे अपना ईश्वर कह सकते हैं। जिस व्यक्ति ने परमाणु बम गिराया था उसका सोचना था कि ईश्वर उसके साथ है। हिटलर से लेकर किचनर तक सारे युद्ध-प्रणेता और छोटे-बड़े सेनानायक भी ईश्वर के नाम पर युद्ध करने से हिचकते नहीं। क्या वह प्रतिमा अथवा विचार ईश्वर हो सकता है? या क्या ईश्वर कोई ऐसी चीज़ है जो हमारी

Chapter 11

कल्पना शक्ति से परे है, जिसका आकलन हमारा मन नहीं कर सकता?

God is something totally unfathomable by us and comes into being only when our minds are quiet, when our minds are not projecting, struggling. When the mind is still, then perhaps we shall know what God is.

So, it is very important, while we are young, not to be caught by the word God, not to accept what we are told God is. There are many eager to tell us what God is. But, we must examine what they tell. And there are many people who say there is no God either. We must not be caught by what they say but examine it equally carefully. Neither the believer nor the nonbeliever will ever find God. It is only when the mind is free of belief and nonbelief, when the mind is still, that there is a possibility of finding God.

We are never told of these things. From childhood, you are told there is God, and you repeat it. When you go to some guru;s he will tell you;s 'There is God. Do this and do that. Repeat this mantra, do that puja, practice such and such a discipline, and you will find God.' You may do all this, but what you find will not be God. It will only be your own projection, the projection of what you want.

All this is difficult and requires a great deal of thought and inquiry. That is why, when you are in a school of this kind, you should grow in freedom so that your mind may find out for itself, may

ईश्वर की गूढ़ता की थाह ले पाना हमारे लिए संभव नहीं है और इसके सत्य का स्पर्श तब होता है जब हमारे मन मौन होते हैं, जब हमारे मन मानसिक प्रक्षेपण नहीं कर रहे होते, संघर्षरत नहीं होते। मन जब निश्चल होता है संभवतः तब हम यह जान पाते हैं कि ईश्वर क्या है।

इसलिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि छोटी आयु से ही ईश्वर शब्द में हम अटकें नहीं, ईश्वर के बारे में जो कुछ हमें बताया जाता है उसे स्वीकार न कर लें। ऐसे अनेक लोग हैं जो हमें ईश्वर के संबंध में बताने के लिए उत्सुक हैं। किंतु वे हमसे जो कहते हैं हमें उसकी जांच करनी चाहिए। और ऐसे भी कई लोग हैं जो कहते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। उन लोगों की बातों में भी हमें नहीं अटकना है बल्कि सावधानी से उसकी भी जांच-पड़ताल करनी है। न विश्वास करने वाले न ही अविश्वास करने वाले कभी भी ईश्वर को पा सकेंगे। जब मन विश्वास तथा अविश्वास दोनों से मुक्त होता है, जब मन निश्चल होता है केवल तभी ईश्वर के सत्य का बोध संभव है।

इन सब पहलुओं के बारे में हमें कभी नहीं बताया जाता। बचपन से ही आपको यह बताया जाता है कि ईश्वर है और आप उसे दोहराते हैं। जब आप किसी गुरु के पास जाते हैं तो वह आपसे कहेगा, 'ईश्वर है। इस-इस प्रकार से यह-यह करो। इस मंत्र को जपो, उस पूजा को करो, अमुक अनुशासन का, व्रत का पालन करो और तुम्हें ईश्वर प्राप्त हो जाएगा।' आप यह सब कर सकते हैं पर इसके पश्चात आपको जो प्राप्त होगा वह ईश्वर नहीं होगा। यह बस आपके ही मन का प्रक्षेपण होगा, आप जो चाहते हैं उसकी ही मानसिक छवि होगा।

यह सभी कुछ कठिन है और इसे समझने के लिए बहुत अधिक चिंतन और खोजबीन करने की ज़रूरत है। और यही वजह है कि जब आप इस तरह के किसी विद्यालय में हैं तो आपको स्वतंत्रतापूर्वक विकसित होना चाहिए ताकि आपका मन स्वयं इसका पता लगा सके, स्वयं ही इसका

Chapter 11

discover; then the mind becomes creative, astonishingly alert.

Question: Why does a human being suffer though he does his best with whatever capacity he has?

Krishnamurti: Whatever capacity I may possess, why do I feel sad when I cannot fulfil, when I am not successful in carrying out my intention? When you are doing something to the best of your capacity, why do you feel sad? Is it not simple, this question?

We are not satisfied with just doing what we love to do. We want what we do to be a success. To us, the doing is not important, but the success, the result, what the doing will bring. When our action is not successful, when it does not bring about what we want, we feel sorrow laden. The drive behind our action is our desire for success, our desire for power, for recognition, for position, for status. We want somebody to tell us how marvellously we have done. All this means, really, we never know how to love a thing and do it just for itself, not for what it will bring. We do everything with an eye on success, on the future, on tomorrow, and when tomorrow does not come we feel miserable; this is because we never do anything for the love of the thing itself.

There are many here who are teachers and others who are professors or big business people or officials. Why are you in those professions? Not because you love what you do, but because there is nothing else for you to do. So, whatever you do, you want it to be

रहस्य खोल सके। तब मन सृजनशील होने लगता है, आश्चर्यजनक रूप से सतर्क हो जाता है।

प्रश्न : अपनी संपूर्ण उपलब्ध क्षमता का सर्वोत्तम प्रयोग करते हुए भी मनुष्य पीड़ा क्यों भोगता है?

कृष्णमूर्ति : मुझमें कितनी भी क्षमता हो किंतु जब मुझे अपने ध्येय में सफलता नहीं मिल पाती, जब मैं अपने इरादे पूरे नहीं कर पाता तो मैं दुखी क्यों हो जाता हूँ? जब आप अपनी संपूर्ण शक्ति लगा कर कुछ कर रहे होते हैं तो आप दुखी क्यों होते हैं? क्या यह एक सरल सा प्रश्न नहीं है?

अपने प्रिय कार्य को कर पाने से जो तृप्ति मिलती है हम उतने से ही खुश नहीं होते। हम चाहते हैं कि हम जो कर रहे हैं वह कार्य सफल हो। हमारे लिए कार्य को करना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता जितना कि सफल होना, उसका परिणाम, उस करने से हमें जो प्राप्त होगा। और जब हमें अपने काम में सफलता नहीं मिलती, जब हमें हमारा मनचाहा फल नहीं प्राप्त होता तो हम दुख के बोझ तले दब जाते हैं। सफल होने की इच्छा, सत्ता, मान्यता, पद और सम्मान पाने की चाह ही हमारे कार्य की मूल प्रेरणा होती है। हम चाहते हैं कोई आकर हमसे कहे : 'आपने कितना बढ़िया काम किया है।' इस सबका सच में यही मतलब है कि किसी चीज़ से प्रेम करना हम नहीं जानते, और केवल उसकी खातिर ही उस काम को नहीं करते बल्कि कुछ पाने की लालसा से उसे करते हैं। हम हर काम सफलता को दृष्टि में रखकर करते हैं, भविष्य पर, कल पर दृष्टि रखकर करते हैं और जब उस कल के आने का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ता तो हम व्याकुल हो जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम ऐसा कुछ नहीं करते जिसे करने भर से हमें प्रेम हो।

यहां पर अनेक लोग ऐसे हैं जो शिक्षक हैं, प्रोफेसर हैं, बड़े व्यवसायी या उच्च अधिकारी आदि हैं। आप इन कार्यों में क्यों लगे हैं? इसलिए नहीं कि आप जो कर रहे हैं उससे आपको लगाव है बल्कि इसलिए लगे हैं क्योंकि करने के लिए आपके पास कोई और काम है ही नहीं। इसलिए आप जो भी कार्य कर रहे हैं उसे सफल होते देखना चाह रहे हैं। आप सफलता की लहर पर

Chapter 11

successful. You want to ride on the wave of success, and so you are always competing, struggling, destroying the capacities of the mind thereby.

Question: How can we live a life without experience and memory?

Krishnamurti: You want to know how to get rid of memory. That is, you want to find a method, a system. But the system, the method, only gives you further experience; it only cultivates memory, does it not? When I know how to do a thing, it becomes a habit. If I know how to read and write, the 'how' then becomes a part of my memory, and with that memory I write and recognize every word, every syllable.

What I said the other day was about something entirely different. I said that life is a process of experience and memory. The very living is experience, and experience creates tradition, memory; with that tradition, memory, and habit, we live. So, there is never anything new. Is it not possible to live with experience which does not corrupt, which does not merely become a memory through which we look at life? We discussed this very carefully. But one has to go into it over and over again from so many different view points to get the whole meaning of it.

Question: Does history prove the existence of God?

Krishnamurti: Is it a matter of proof? History may or may not prove that there is or is not God. Millions say there is God, and millions say equally emphatically

सवार होना चाहते हैं और इसलिए आप सदैव होड़ में लगे रहते हैं, संघर्ष करते हैं और इस तरह से मन की क्षमताओं को नष्ट कर लेते हैं।

प्रश्न : हम अनुभव और स्मृति के बिना जीवन कैसे जी सकते हैं?

कृष्णमूर्ति : आप यह जानना चाहते हैं कि हम स्मृति से कैसे मुक्त हों। यानी आप कोई तरीका, कोई विधि ढूँढ़ रहे हैं। परंतु कोई भी विधि, कोई भी तरीका आपके अनुभव में और इजाफा करेगा--इससे तो स्मृति और अधिक मज़बूत होगी, होगी न? जब मैं किसी कार्य को करना जानता हूँ तो उसका अभ्यास हो जाता है। यदि मुझे यह पता हो कि कैसे पढ़ा-लिखा जाता है तो 'कैसे' की प्रक्रिया मेरी याददाश्त का हिस्सा बन जाता है और उस याददाश्त के सहारे मैं प्रत्येक शब्द को, प्रत्येक स्वर को, व्यंजन को लिख और पहचान सकता हूँ।

उस दिन मैं जो कुछ कह रहा था उसका मतलब इससे बिलकुल अलग है। मैंने कहा था कि जीवन अनुभव एवं स्मृति की एक प्रक्रिया है। जीवन को जीना ही अनुभव है, तथा अनुभव परंपरा को जन्म देता है, स्मृति को जन्म देता है, तथा उस परंपरा, स्मृति और अभ्यास के साथ हम जीते हैं। इसलिए जीने में नया कुछ नहीं होता। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम अनुभव के साथ इस प्रकार जिएं कि वह जीवन को दूषित न कर सके, जो केवल स्मृति भर बनकर न रह जाए और जिसके माध्यम से हम जीवन को देखने लगे? इस बारे में हमने बहुत सतर्कतापूर्वक चर्चा की थी। परंतु यह आवश्यक है कि बार-बार इस पर अलग-अलग दृष्टियों से विचार किया जाए ताकि इसका पूरा आशय स्पष्ट हो सके।

प्रश्न : क्या इतिहास ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करता है?

कृष्णमूर्ति : क्या यह सिद्ध करने की बात है? ईश्वर है या नहीं है, शायद इसे इतिहास सिद्ध कर पाए, या शायद न कर पाए। लाखों लोग कहते हैं कि ईश्वर है और इतना ही ज़ोर देकर लाखों लोग दावा करते हैं कि ईश्वर नहीं है। प्रत्येक पक्ष इस

Chapter 11

there is no God. Each side quotes authority, history, scientific proof.

बारे में प्रमाण, इतिहास, वैज्ञानिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है।

The mind is frightened, it wants something to rely on, something on which it can depend. The mind wants something permanent to which it can cling. With this desire for permanence it seeks authority, negatively or positively. When it seeks authority in those who say there is no God, it repeats and says, 'There is no God.' It is perfectly satisfied in that belief. And there are those who, seeking permanency, say that there is God. So, the mind clings to that and seeks to prove through history, through books, through other people's experiences that there is God. But that is not reality, that is not God. The mind must be free from the very beginning to find out what God is. And the mind is not free when it is seeking security, when it is seeking permanency, when it is caught in fear.

मन भयभीत होता है, यह किसी का सहारा चाहता है, कुछ ऐसा जिस पर आश्रित रह सके। मन ऐसी कोई स्थायी वस्तु चाहता है जिसे सदा सहारे की तरह साथ रख सके। स्थायित्व पाने की इस इच्छा के साथ यह किसी सत्ता-प्रामाण्य की तलाश करता रहता है, फिर वह चाहे नकारात्मक ढंग से मिले या सकारात्मक ढंग से। जब यह उनकी बातों में प्रामाण्य खोजता है जो कहते हैं कि ईश्वर नहीं है, तो यह भी इसे ही दोहराने लगता है। अपने उस विश्वास में पूरी तरह संतुष्ट रहता है। फिर, दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं जो स्थायित्व की तलाश में यह कहने लगते हैं कि ईश्वर है। अतः मन उस बात से बंध जाता है और यह प्रयास करता है कि इतिहास के, किताबों के, दूसरों के अनुभवों के माध्यम से यह सिद्ध कर सके कि ईश्वर का अस्तित्व है। पर वास्तव में वह यथार्थ या ईश्वर नहीं होता। ईश्वर क्या है इसका पता लगा पाने के लिए यह आवश्यक है कि मन बिलकुल शुरु??शुरु से ही मुक्त हो। और जब मन सुरक्षा की खोज में है, स्थायित्व की तलाश में है, भय से ग्रस्त है, तब यह मुक्त नहीं है।

January 18, 1954

१८ जनवरी १९५४